ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.421

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

प्रसाद के राष्ट्रीय जागरण के साहित्य में राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना का महत्त्व

डॉक्टर संगीता शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दयानंद पीजी कॉलेज हिसार

मूल शब्द:- भारत भूमि के निवासियों में पुनर्जागरण, आत्म संदेश की प्रेरणा, राष्ट्रीय आंदोलन की अहिंसात्मक हलचल, एक राष्ट्र का संदेश, राष्ट्रीय गौरव के प्रबल संकेत, बौद्धिक बल के अक्षय भंडार ,समष्टि सुख के लिए आत्म बलिदान, प्रशस्त पुण्य-पंथ , कर्म क्षेत्र में अवतीर्ण, जीवन संग्राम।

देश तथा जाति को सुरक्षित रखने के लिए प्रत्येक राष्ट्र को समय-समय पर राजनैतिक एकता का सहारा लेना पड़ता है। इसका वास्तविक स्वरूप तब स्पष्ट होता है जब देश पर विदेशियों के हस्तक्षेप से कोई संकट आता है और देशवासियों उस आपत्ति से बचने के लिए एक होकर लड़ने मरने के लिए तैयार हो जाते हैं। कई विद्वान जो राजनीतिक एकता को ही राष्ट्र का नाम देते हैं।जो कुछ भी हो राष्ट्रीयता की प्रौढ़ भावना हमें राजनीतिक एकता में ही दिखाई पड़ती है। देश के वीरों ने इसके स्वरूप को खंड बनाए रखने के लिए सदा संघर्ष किया है।

जयशंकर प्रसाद ऐसे वीरों की पंक्ति में अग्रणी स्थान पर हैं, जिन्होंने निःसन्देह साहित्य के माध्यम से राजनीतिक एवं राष्ट्रीय चेतना के स्वरूप को अखंड स्वरूप प्रदान करने का भरसक प्रयत्न किया है। इस दृष्टि से प्रसाद राष्ट्रीय साहित्यकार ठहरते हैं, जिनकी राष्ट्रीयता क्षणिक नहीं, समपयोगितावादी नहीं, युग-युग के लिए भारतभूमि के निवासियों में पुनर्जागरण और आत्मसंदेश की प्रेरणा जगाने वाली है।

प्रसाद का युग भारतीय राजनीति का संधि स्थल था। 'कल्याणी परिणय से लेकर 'ध्रुवस्वामिनी तक वर्षों के इस दीर्घ काल ने प्रथम महायुद्ध के संहारकारी स्वरूप के साथ-साथ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की अहिंसात्मक हलचल को भी देखा।

प्रसाद के नाटकों में विदेशी शासन के प्रति जगाते हुए विचारों का धुंआ, चिंगारियों के रूप में प्रकट हुआ है। प्रसाद ने वर्तमान संघर्ष से भागकर, भारत की प्राचीन संस्कृति की ओर पलायन नहीं किया। वरन् अपने नाटकों द्वारा अतीत के पर्दे पर एक स्वतन्त्र और संगठित राष्ट्र की योजना को रंगने का प्रयास किया। चन्द्रगुप्त' का सम्पूर्ण कथानक एक आर्यवर्त्त, एक 'देश', 'एक राष्ट्र' का संदेश गुंजाता हुआ प्रतीत होता है। अखंड भारत का "हिमालय के अन्तरीप तक प्रसारित इस महादेश का नया सपना हिन्दी साहित्य में पहली बार प्रसाद ने ही देखा और अपनी सारी कृतियों को उन्होंने इस नीति से भर दिया।" १

'स्कन्दगुप्त' में आर्यवर्त्त के गौरव के लिए गौ, ब्राह्मण और देवता की रक्षा का जो स्वर प्रसाद ने उठाया वह राष्ट्रीय भावनाओं से लबालब भरा हुआ है। उठो स्कंद, आसुरी वृत्तियों का नाश करो, सोने वालों को जगाओ और रोने वालों को हंसाओ। आर्यवर्त्त तुम्हारे साथ होगा और उस आर्य पताका के नीचे समस्त विश्व होगा। राष्ट्र के उद्धार के लिए स्कन्दगुप्त, बंधुवर्मा और गोविन्दगुप्त जैसे महापुरुषों ने जो त्याग किए. उनका इतिहास तो साक्षी मात्र है, प्रसाद के नाटकों ने उस महान त्याग को जीवन दे दिया, वाणी दे दी। 'राज्यश्री में जिस 'देव दुर्लभ दृश्य' को देखकर चीनी यात्री को यह विश्वास हो गया था कि अभिताभ की जन्म भूमि यही हो सकती है, वह भी राष्ट्रीय गौरव की ओर प्रबल संकेत करता है। निःसन्देह प्रसाद ने राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर राष्ट्र के महापुरुषों के क्रियाकलापों का वर्णन जागृत करने के लिए अपने नाटकों में किया है।

प्रसाद दूरदर्शी कलाकार थे। 'जनमेजय' के नाग- यज्ञ से लेकर अन्तिम नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' तक सभी राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत हैं। 'चन्द्रगुप्त' और 'स्कन्दगुप्त' में यह राष्ट्रीयता चरमावस्था तक पहुँच अनन्त बलिदानों को गोद में

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

लिए वैभव के शिखर पर आसीन है। 'चन्द्रगुप्त' 'ध्रुवस्वामिनी' और 'स्कन्दगुप्त' में भारतीय राष्ट्र पर विदेशी आक्रमण हुए - ऐसे ही समय राष्ट्रीयता चमकती है।

देश की विछिन्न शक्तियों को एक झंडे के नीचे एकत्र कर सुराज्य स्थापित करने वाले नेता की खोज में थे वे। 'चन्द्रगुप्त' में चन्द्रगुप्त देश की अखंडता और एकता के प्रतीक हैं, प्रेरणा के महान स्त्रोत कूटनीति और बौद्धिक बल के अक्षय भंडार जो समष्टि सुख के लिए विश्वकल्याण और विश्वशांति के लिए उच्च संस्कृति के निर्माणार्थ प्रेरणा की अमूल्य निधि लुटाते रहते हैं। चन्द्रगुप्त की वीरता, निश्छलता, कलाप्रियता, सौन्दर्यप्रियता, आचरण की महानता और त्याग प्रियता भारतीय जाति की विशेषताएँ हैं, जो व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण नहीं। नन्द हैं भारतीय जाति का कलंक, श्रेय कलंक को मिटाने में ही है।

डा० शम्भुनाथ पांडेय का कथन युक्ति संगत है कि "प्रसाद जी के राष्ट्रीय भावना जितने प्रखर रूप में चन्द्रगुप्त में व्यक्त हुई है, उतनी अन्य किसी रचना में नहीं।" २ नन्द द्वारा चाणक्य का अपमान व्यक्तिगत नहीं, एक राष्ट्रीय घटना है।। चाणक्य की निर्मल-प्रेरणा ने समस्त आर्यवर्त्त को एक झंडे तले एकत्र कर दिया। समस्त आर्यवर्त्त सबका हुआ। क्षुद्रक, मालव, पंचनद, यौधेय सभी गणराज्य आपसी भेदभाव भुलाकर आर्यावर्त के स्वस्थ अंग बने। आर्य युवक-युवतियों के प्राण पुकार उठे। अलका के गीत में राष्ट्र बोल उठा- "प्रशस्त पुण्य-पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

'स्कन्दगुप्त' में प्रसाद की राष्ट्रीय भावना और भी उज्ज्वल, तीव्र, प्राणवान और त्यागमयी होकर आई है। स्कन्दगुप्त के समय टिड्डी दल के समान हूणों की बाद भारतीय राष्ट्र की सुख-समृद्धि और शान्ति को बहा ले जाने के लिए आ रही थी। इसमें अधिक से अधिक त्याग, कष्ट,सहिष्णुता, देश-सेवा और निःस्वार्थ बलिदान के महान चित्र हैं। बन्धुवर्मा का महान त्याग-मालव राज्य को स्कन्दगुप्त के चरणों में समर्पण कर देना, हंसते-हंसते अपना बलिदान देना, राष्ट्र-यज्ञ में गौरव-पूर्ण आहुति है। स्कन्दगुप्त, देवसेना, पर्णदत्त, मातृगुप्त, बन्धुवर्मा सभी देशभक्ति की दीप- शिखा से आलिंगन करने के लिए आकुल हो आगे बढ़ रहे हैं। सभी को केवल एक पागलपन है, किसी प्रकार राष्ट्र का उद्धार हो। साम्राज्य स्कन्दगुप्त की निजी सम्पत्ति नहीं हैं। एक नहीं, सौ स्कन्दगुप्त उस पर निछावर हैं और स्कन्दगुप्त भी अपने अधिकार के लिए राष्ट्र के लिए लड़ रहा है। यदि ऐसा महान् साम्राज्य सुख-शान्ति और समृद्धि का भण्डार नष्ट होने लगे तो हृदय क्यों न टुकड़े-टुकड़े हो जाए। ऐसे विशाल साम्राज्य के तनिक भी अनिष्ट की आशंका से हृदय काँप उठेगा। मातृगुप्त के शब्दों में हर एक भारतवासी की व्यथा बज उठेगी- "आलस्य- सिन्धु में शेष पर्यक-शायी सुषुप्तिनाथ जागेंगे, सिन्धु में हलचल होगी, रत्नाकर से रत्न - राजियां आर्यवर्त्त की बेला भूमि पर निछावर होंगी। उद्बोधन के गीत गाये, हृदय के उद्गार सुनाए परन्तु पासा पलटकर भी न पलटा।"३

मातृगुप्त के इन शब्दों में वर्तमान भारत की सैकड़ों क्रान्तियों की बेबसी छटपटा रही है पर जिस देश में देवसेना जैसी तपस्विनी बालाएं हों, जो देश सेवा के लिए भीख तक मांग सकती हैं, अपनी कामनाओं को कुचलकर आर्यावर्त्त के उद्धार के लिए अपने को भस्म कर सकती है, वह देश सदा स्वाधीन रहेगा। जिस देश में बन्धुवर्मा, भीमवर्मा, मातृगुप्त जैसे युवक हो, वह कभी भी पद्दलित नहीं हो सकता। ये ही वे शक्तियाँ हैं जिससे प्रत्येक भारतीय के प्राणों में सबल विश्वास जागता और आक्रमणकारी का कलेजा काँपता है। यह वह खड्ग है, जिसकी छाया में प्रत्येक देशवासी, सुरक्षा का विश्वास करता है।

यदि राजनीतिक चेतना पर विचार किया जाए तो महात्मा गाँधी का विद्यार्थियों को राजनीति में सक्रिय भाग लेने के लिए आह्वान तक्षशिला के विद्यार्थियों द्वारा राजनीति में सक्रिय भाग लेने में व्यक्त हुआ है। न्याय तथा परम्परा की दृष्टि से सम्राट बड़े पुत्र को ही राज्य सौंपता था। परम्परा कितनी खोखली हो गयी थी, इसका सम्पूर्ण राजनीतिक चित्रण 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक में है, जहाँ दुर्बल, विलासी, मद्यपी रामगुप्त मात्र परम्परा से राजा हो गया है। इन सड़ियल रूढ़ राजनीतिक नीतियों ने देश का कितना अपकार किया है, इस सत्य के जीते-जागते उदाहरण 'ध्रुवस्वामिनी' में मिलते हैं। रानियों के अन्तःपुर में शालीनता का साम्राज्य था। किन्तु स्थिति के बिगड़ते ही उनमें नीचता नृत्य करने लगती थी। 'ध्रुवस्वामिनी में बौने, कुबड़ों के दृश्य इसी सत्य के रूप हैं। अमात्य, सामन्त, पुरोहित, किन स्थितियों में थे तथा उनका क्या रूप था, इन सभी को राजनीतिक संदर्भों में उभारा हुआ है। योग्य 'अमात्य' राजकाज की जान थी, इसलिए चाणक्य नन्द के मन्त्री 'राक्षस' पर

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

मुग्ध है। 'ध्रुवस्वामिनी' में अमात्य शिखर स्वामी कहता है "राजनीति के सिद्धान्त में राष्ट्र की रक्षा सब उपायों से करने का आदेश है।" ४ उसके लिए राजा-रानी कुमार आदि सभी का विसर्जन किया जा सकता है। अमात्य के ऊपर बड़ा दायित्व यही था कि यह राजा के भविष्य के लिए राजा को सही सलाह दे। इसलिए शिखर स्वामी से व्यंग्य करती हुई ध्रुवस्वामिनी कहती है।

"अमात्य, तुम बृहस्पति हो चाहे शुक्र, किन्तु धूर्त होने से ही क्या मनुष्य भूल नहीं कर सकता? आर्य समुद्रगुप्त के पुत्र को पहचानने में तुमने भूल तो नहीं की।। सिंहासन पर भ्रम से किसी दूसरे को तो नहीं बिठा दिया।"५

वस्तुतः राजनीतिक चेतना के संकेत भी उनके सभी नाटकों में मिलते हैं कि किस तरह आपसी फूट, कलह, वैमनस्य, धर्मान्धता, धृष्टता तथा विदेशी युद्धों से देश किस प्रकार विघटित हो रहा था और आर्यवीर स्थिति से कैसे सीधी टक्कर ले रहे थे। 'जनमेजय' काल में नाग जाति उत्पात की किस सीमा पर थी. ब्राह्मणवाद में कितना आक्रोशपरक विद्रोह था। बौद्ध युग की अस्थिर राजनीतिक स्थितियों के चित्र और जीवन पर धर्म का बढ़ता हुआ कसाव है तो मौर्य काल में विदेशी आक्रमण तथा देश भी भीतरी जर्जरता, टूटन तथा विडम्बना के दृश्य एक साथ दिए गए हैं। 'चन्द्रगुप्त' नाटक के आरम्भ में प्रबुद्ध छात्र सिंहरण कह रहा है कि "आर्यवर्त्त का भविष्य लिखने के लिए कुचक्र और प्रतारणा की लेखनी और मसि प्रस्तुत हो रही है। उत्तरापथ के खण्ड राज-द्वेष से जर्जर है। शीघ्र भयानक विस्फोट होगा।"६ भयानक विस्फोट की यह सूचना अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई है छोटे-छोटे शासक लड़ पड़े, देश में सिकन्दर के आक्रमण के समय पर्वतश्वर का किसी ने साथ नहीं दिया। नन्द तथा पर्वतेश्वर के मध्य गहरा विरोध 'प्रसाद' जी ने चित्रित किया हैं। आम्भीक तथा पर्वतेश्वर में भी घरेलू कलह है। मगध की स्थिति डावाडोल है, नन्द के अत्याचारों से प्रजा पीडित है। स्कन्दगुप्त' में आन्तरिक कुचक्र तथा शकों ,हूणों के संघर्ष का राजनीतिक चित्र है। पुरगुप्त के कारण घरेलू कलह तथा पुष्यमित्रों के आक्रमण तथा भीतरी - बाहरी युद्ध ने देश को पीस डाला है। 'धुवस्वामिनी' में दुर्बल उत्तराधिकारी तथा शकों की राजनीति पुनः उभरी है। 'राज्यश्री' में मालव शासक ने कन्नौज के शासक ग्रहवर्मा को मार दिया है। उत्तर में हर्ष ने मालवा जीत लिया है किन्तु दक्षिण के सम्राट पुलकेशिन द्वितीय से उसकी पराजय हुई है।

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में केवल राजनीति की यह तस्वीर ही स्पष्ट परिलक्षित नहीं होती, उसमें नवयुग की नवीन समस्याओं का समाधान भी मिलता है। 'अजातशत्रु' में पारिवारिक कलहों की शांति के प्रयास के साथ-साथ अहिंसा और आत्मत्याग के महत्त्वों को ध्रुवता भी प्रदान की गई है। 'चन्द्रगुप्त' में विदेशी आक्रमणकारियों और विजेताओं को पराजित करने के लिए छोटे-छोटे राज्यों और दलों को स्वतः ही एक दूसरे में अपना अस्तित्व मिलाकर एक हो जाने का आदेश है। इसमें छोटे-छोट स्वार्थों से ऊपर उठ कर एक अविच्छिन्न राजनीतिक संगठन की आवश्यकता की ओर भी प्रसाद ने संकेत किया है। यह कार्य चाणक्य ने किया, चन्द्रगुप्त ने किया और गाँधी ने किया। गांधी जी ने कहा था कि अंग्रेजों को हम प्रेम से जीतेंगे और इस संघर्ष में हमारा अस्त्र होगा-अहिंसा। यह उक्ति स्वत: ही हमारा ध्यान चाणक्य की उस महान् राजनीतिक विजय की ओर आकृष्ट करती है ,जिसमे सिकन्दर भारत छोड़कर गया अवश्य परन्तु भारत से मैत्री का हाथ बढ़ाकर; सिल्यूकस हार कर यूनान लौटा सही, परन्तु भारत को कार्नेलिया के स्नेह बंधन में बांध कर गाँधी का सपना, गाँधी ने अपनी आँखों से देख लिया। 'भारतीय युद्ध करना जानते हैं, द्वेष नहीं इन शब्दों में प्रसाद ने भारत के राजनीतिक भविष्य को देख लिया था।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | | Impact Factor: 6.551| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 2, March 2023|

निष्कर्ष:-

अतः जयशंकर प्रसाद के राष्ट्रीय जागरण के साहित्य में राजनीतिक, राष्ट्रीय चेतना का महत्त्व इस बात में ही है कि हमें प्राचीन की आपसी कलह से शिक्षा लेते हुए, देश का नव-निर्माण करना चाहिए। विदेशी आक्रमण के समय भीतरी फूटों को ,स्वार्थों को समेट कर सम्मिलित शक्ति से उनका मुकाबला करते हुए देश को स्वतन्त्र करना चाहिए। युद्ध काल में प्रत्येक नागरिक एक सैनिक हो, जिसके मुख से कर्म की भाषा फूटनी चाहिए क्योंकि "यह जागरण का अवसर है और जागरण का अर्थ है कर्म क्षेत्र में अवतीर्ण होना और कर्म क्षेत्र क्या है? जीवन-संग्राम।“

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

१. रामरतन भटनागर, प्रसाद के नाटक, पृ० 340
२. 'डॉ० शम्भुनाथ पाण्डे, आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका, पृ0 12
३. जयशंकर प्रसाद, स्कंदगुप्त ,पृष्ठ 118
४. जयशंकर प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, पृ0 26
५. जयशंकर प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, पृ० 26
६. जयशंकर प्रसाद, चन्द्रगुप्त, पृ0 47

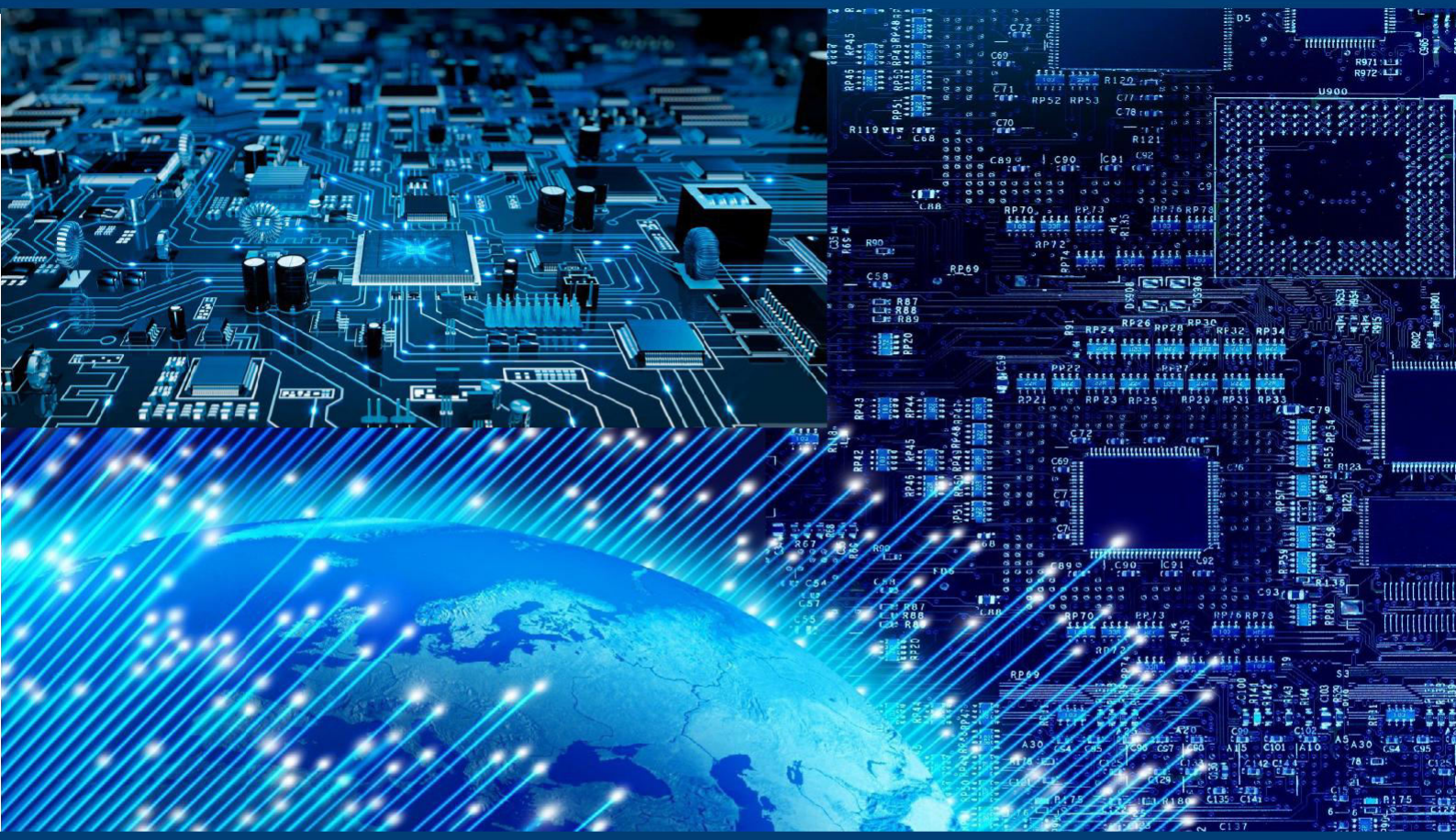

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |